दहेज

वर्तमान भारत का जन समाज प्राचीन भारतीय समाज की अपेक्षा बिलकुल ही भिन्न रूप अपना का खडा है। क्यों? उत्तर यही है कि नींव किसी दांचे की पडी थी, परन्तु मकान कुछ और ही ढंग का खडा हो गया। आज के समाज ने इतना भयानक एवं बीभत्स रूप धारण किया है कि रुढियाँ मनुष्य को अपने पंजों में जकडती चली जा रही है। भारत की दहेज प्रथा इस के लिए एक उज्वल दृष्टान्त है।

हम गिज सुबह उठते हैं। अखबार हमारे जमाने होता है। हम अखसर पढते हैं कि आज 'ए' की पत्नी ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। 'बी' की पत्नी को पति, सास और नन्द ने मिलाकर मिट्टी का तेल छिडक कर जला दिया। आखिर ऐसा क्यों होता है? इस का एक ही कारण है — दहेज। नव विवाहित युवतियों के बीच निरंतर बढती आत्महत्यारोग का एक मात्रा कारण देहेज प्रथा है। पति पत्नियों के बीच झगडा, तलाक और अन्य अनेक सामाजिक समस्याओं के मूल में इस बुरी प्रथा को हम देख सकते हैं। यह हार भयंकर बीमारी के रूप में देश-भर में फैल गयी है। इसकेलिए कोई इलाज अब तर सफल सिद्ध नहीं हुआ है।

पुराने ज़माने में लडकी घर की लक्ष्मी मानी जाती थी। वह घर की शोभा और अलंकार थी। लेकिन आज! आज घर में अगर लडकी पैदा हुई तो पूरे परिवार में मृत्यु का सा भाव छा जाता है। लडका चाहे बुरा निकले, माँ-बाप की इज्जत मिट्टी मिला दे तो भी एक आश्वास तो ज़रूर है। वह एक दिन पूरे परिवार का भविष्य दहेज लाकर चमका देगा।

लडकी के जन्म के साथ ही माँ-बाप का सुख-चैन लुट जाता है। पिता अगर गरीब हो तो लडकी को हर पग पर ठोहर ही खाना पडता है। शादी की बात करने के पहले, लडकी को देखने के पहले लडके वाले प्रश्न करते हैं — 'दहेज' में क्या क्या देंगे। स्कूटर, फ्रिज, मिक्सी-किक्सी सब माँग लेते हैं। आजकल टी. वी. भी माँगना फैशन हो गया है। परेशान पिता हर बात पर लडकि को कोसने लगता है। बेचारी लडकी इन सब बातों को सुनकर यदि आत्माभिमान होते या तो आत्महत्या कर लेती है या घर से भाग खधी हो जाती है। दहेज की इस कठोर शूली में हर साल न जाने कितनी निरपराध और निष्कलंक लडकियाँ चढती हैं।

दूसरी तरफ यदि लडकी के पिता ने दहेज की हर माँग पूरी कर दी तो साल चन से कट जाते हैं। फिर पैसे का लेभ सिर उठाकर समस्या बन जाता है। लडकी के हाथ नयी माँगों की सूची दे कर उसे अपने घर भेज दिया जाता है। अगर मागें पूरी नहीं हुई तो पहले कडवा सलूक, फिर मार-पीट और अंत में वह हो जाता है। पिता को तार मिलेगा कि बिदिया ने आत्महत्य कर ली।

सुधा नायर, बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष

सारा दोष इस खढीनादी समाज का है। लडकी के गुण, योग्यता और स्वभाव का कोई महत्व नहीं। इस भयानक समस्या का यम समाधान नहीं हो सकता कि लडकी शादी न करे। क्यों कि विवाह न करे तो कुछ दिन बाद समाज उस पर उँगली उठाने लगेगा।

सरकार के निरन्तर प्रचार और अन्य प्रयत्नों के बाद भी यह बुरी प्रथा देश में घटने के बजाया बढती ही रहती हैं। इस को खतम करने का एक ही रास्ता है। वह यह है कि आज कल के पढे-लिखे नौजवान यह प्रतिज्ञा कर ले कि वे बिना दहेज लिये शादी करेंगे। और युवतियाँ भी पढ लिख कर अपने पैरों पर खडे हो जाएँ ताकि वह किसी पर बोझ न बने और ऐसे मुवक से ही विवाह करे जो उसके गुणों का ख्याल करे। हमारे समाज को भी चाहिए कि वह इस बुराई को बुराई समझे और अपनी संतानों को इस बुराई से बचाये।

घायल मन

एस. नायर, बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष

यह टूटे हुआ दिल
रोता बिलखता
आँसु बहाता
यह टूटा हुआ दिल।

आशाओं के रंगीन धागों से
बुनेथे बडे ख्वाबों से
भूली बिसरी यादों से
दिल के फूल बहारों से

चाहा था उनको मैं ने
जीवन से ज्यादा अपने
सोचा था होंगे अपने
कभी ये मेरे अपने।

अहा, दिल झुम उठा
अहा, तन मचल उठा
लगा, डोली उठ गयी मेरी
आशा के तरानों की।

डोली समझी थी जिसे अपनी
जीवन समझा था जिसे अपना
हाय! उसे विधि के पंजों ने
नाच दिये मेरे सपने को।

टूटे हुए सपने

रवीन्द्रन एन., बी. ए. द्वितीय वर्ष

जितने प्रेमी हुए जगत में
सोचा होगा उन्होंने मन में
प्रेयसी रहेगी सदा ही अपनी
पूरे होंगे सुहाने सपने।

मैं ने पहले मुहब्बत न की थी,
किसी ने अब तक मेरे दिल पे
प्यार भरी दस्तक न दी थी
जीवन पथ - पर अकेला मैं था।

हुई इक दिन उस परी से मुलाकात,
मत पूछो मुझ से, हुई कैसे यह बात
बातों बातों में, प्यार तो हो गया
खयालों में उसके, मेरा दिल खो गया।

वह पास हो तो मूंह खोल न सकता,
दो इक शब्द मैं बोल न सकता,
लिखे प्रिया को, कुछ प्यार भरे खत
कहने लगा दिल, यही है मुहब्बत

ख्वाबों में बनाया इक शीश - महल,
महबूबा को रहने हर दिन हर पल,
प्यार की नैया में सवार करता था,
जीवन का सागर पार करता था।

कितना मजबूर है इनसान
आ गया जोर से इक तुफान
मेरे प्यार की नाव तो डूब गयी।
मुझे छोड महबूबा दूर गयी।

कितनी विचित्र ये जीवन की राहें
निकल रही हैं अब दिल से आहें
याद आती है, छूटे हुए सपने,
सामने पडे है, टूटे हुए सपने।